दिनाँक :- 04-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा।

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- प्रथम

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- मौर्योत्तर काल स्रोत (धर्म)

इस युग में धर्म को प्रभावित करने वाले दो महत्वपूर्ण कारक थे।

① यज्ञ का स्थान भक्ति ने ले लिया।

② ब्राह्मणवादी धार्मिक व्यवस्था में अनार्य तत्वों का आत्मसातीकरण हुआ।

बौद्ध धर्म :- इस काल में साधारण जनता में बुद्ध धर्म का प्रचार था। यद्यपि शुंगवंश के शासन

काल मे बौद्ध धर्म को धक्का लगा। परंतु शुंग शासन काल में साधारण जनता में बौद्ध धर्म मे धीमरहुत स्तूप का निर्माण हुआ। विदेशी आक्रमण कारियों के आगमन ने भी बौद्ध धर्म को प्रोत्साहन दिया क्योंकि उनमें अधिकांश शासकों मे बौद्ध धर्म का समर्थन किया। मिनांडर कुजुल कडफिसस और कनिष्क बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। कनिष्क के शासन काल मे पार्श्व के परामर्श पर चौथा बौद्ध सम्मेलन हुआ। कनिष्क ने पेशावर मे स्तूप का निर्माण करवाया। दक्कन के कुछ सातवाहन शासक तथा पश्चिमी भारत के शकक्षत्रप भी बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। पश्चिमी भारत में सातवाहन शासकों के द्वारा कई गुफाऐ निर्मित कराई गई। ऐसी गुफाऐ नासिक कार्ले, भजा, जुन्नार, कन्हेरी आदि स्थानों पर बनाई गई।

महायान बौद्ध धर्म के अनुसार के विकास महासांघिक सम्प्रदाय में हुआ जिसका प्रधान केन्द्र अमरावती तथा नागार्जुनकोण्ड था। महायान की उत्पत्ति तथा प्रसार आंध्रप्रदेश में हुई। कनिष्क के समय चतुर्थ बौद्ध संगीति के पश्चात इसको मान्यता प्राप्त हुई। प्रथम एवं द्वितीय शताब्दी के दौरान यह संपूर्ण पश्चिमी भारत में फैल गया। नागार्जुन महायान इस को मान्यता प्राप्त हुई शाखा के प्रथम प्रवर्तक थे। इनके अलावा आर्यदेव, असंग तथा वसुबन्धु ने महायान के प्रसार में योग दान किया।

महायान बौद्ध धर्म के अनुसार सभी शक्य मनुष्य बुद्धतत्व की प्राप्ति कर सकते है बशर्ते वे दान शील, वीर्य, ध्यान, प्रज्ञा उपायकौशल्य प्रणिधान बल तथा ज्ञान आदि विशेष गुण प्राप्त कर ले।

महायान बौद्ध धर्म मे भकित का विकास हुआ तथा
बुद्ध के उपासक उनसे दया की आशा करने लगे।
बुद्ध के गुणो पर जोर देने के लिए इस काल मे
उनकी जीवन कथा फिर से लिखी गई। प्रज्ञापार
मिता सूत्र, सद्धर्मपुण्डरीक, लंकावतार सूत्र, सुवर्ण
प्रभाससूत्र महावस्तु ललितविस्तर और अश्वघोष
का लिखा हुआ बुद्धचरित इसी उद्देश्य की पूर्ति थी
महायान बौद्ध धर्म में अर्हत के स्थान पर बोधि
सत्व की परिकल्पना की गई जो व्यक्तिगत निर्वाण
के लिये लालायित नही होता है बल्कि समस्त प्राणियो
के कल्याण के लिये बारबार जन्म लेता है। महायनो
बुद्ध को ईश्वर के अनेक रूप मे देखते है जैसे
अमिताभ, अवलोकितेश्वर, मैत्रेय, वज्रपाणि इत्यादि
विभिन्न सम्प्रदाय :- कौशांबी थेरवादियो का केन्द्र

Scanned with CamScanner

मथुरा :- सर्वास्तिवादियों का केन्द्र

नासिक तथा कन्हेरी : भद्रयानिक का केन्द्र

सातवाहनों के काल में धान्यकटक (अमरावती) महायान बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण केन्द्र था।

उत्तर भारत में सर्वास्तिवादियों की लोकप्रियता थी।

हीनयान तथा महायान बौद्ध धर्म में प्रमुख अंतर

① हीनयान में बुद्ध शिक्षक एवं उपदेशक है जबकि महायान में उन्हें भगवान का स्तर प्राप्त है।

② हीनयान की वस्तुकला में बुद्ध का प्रतिनिधित्व पैर का निशान, उजली हाथी तथा फूल के माध्यम से हुआ है जबकि महायान में बुद्ध की प्रतिमा बनाई जाती है।

③ हीनयान सम्प्रदाय में बोधिसत्व बुद्ध का अवतार था। महायान में बोधिसत्व सभी की भलाई तथा निःस्वार्थ व्यक्तिगत सेवा थी।

Scanned with CamScanner

(4) महायान में ऐसा विश्वास किया जाता है कि लगातार जन्म लेने से व्यक्ति प्रतिमा हासिल कर सकता है। महायान बौद्ध धर्म प्रतिमा के हस्तांतरण की बात करता है।

जैनधर्म:- इस काल में जैन धर्म में भी परिवर्तन हुआ। ईसा की प्रथम शताब्दी के आस पास जैन धर्म में विभाजन हो गया। रूढ़िवादी जैन दिगंबर कहलाये तथा उदारवादी जैन श्वेतांबर कहलाये। दिगम्बर सम्प्रदाय का गुरु शिवभूति था।

कलिंग के शासक उत्साही जैन समर्थक थे। खारवेल तथा उसकी रानी के द्वारा उदयगिरी की पहाड़ी में गुफाएँ निर्मित की गई। कुषाण काल में जैन धर्म मथुरा में लोकप्रियता था। मथुरा मूर्ति कला केन्द्र में तीर्थंकरों की मूर्तियाँ निर्मित की गई। तमिल देश में तमिल देश में तमिल राजाओं द्वारा कुछ गुफाएँ

जैन धर्म को अर्पित की गई। तमिल राजा नेडुमन अंजी ने अकार्ट जिले के जबाई नामक स्थान पर कुछ गुफाऐ जैनो को अर्पित की।

जैन धर्म के प्रचार के लिये जैन साधुओ ने राहत सेवा दल मे परिवर्तित हो गया और जैन साधुओ की सेवा करना था. परंतु धीरे-धीरे यह राहत सेवा दल. धार्मिक संघटित किया। आरंभ मे इस सेवा दल का उद्देश्य अकाल और भूखमरी से पीड़ित जैन साधुओ की सेवा करना था. परंतु धीरे-धीरे यह राहत सेवा दल. धार्मिक सेवा दल मे परिवर्तित हो गया और जैन धर्म का प्रचार इस का उद्देश्य हो गया। इस प्रकार का राहत सेवा दल सबसे पहले मौर्य काल मे शुरू हुआ।

एक श्वेतांबर परंपरा के अनुसार खारवेल के शासन काल मे जैन साधु मगध से पूर्वी तट की ओर बस गये थे।